हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL2**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): जगदीश

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | — |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): II 1-9-18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): जगदीश

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमजोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये। $10 \times 5 = 50$

(क) सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।

~~सन्दर्भ~~ सन्दर्भ - प्रस्तुत काव्यावतरण भक्तिकाल की निर्गुण संत काव्यधारा के शिखर कवि कबीरदास द्वारा रचित है। पं. श्यामसुन्दर द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के 'गुरुदेव को अंग' नामक भाग से लिया गया यह दोहा गुरु महिमा को समर्पित है।

प्रसंग - उपर्युक्त दोहे में कबीरदास ने भक्ति के दौरान सतगुरु के महत्व को व्याख्यायित किया है।

व्याख्या - कबीरदास कहते हैं कि मेरे सतगुरु ने ज्ञान रूपी कमान से मेरे ऊपर उपदेश रूपी बाण चलाया। उससे मैं प्रेम से सराबोर हो गया तथा ~~मेरे~~ वह बाण मेरे शरीर के भीतर स्थायी रूप से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बन गया।

विशेष - निर्गुण संत काव्यधारा में अपने गुरु को 'गोविन्द' से भी ज़्यादा महत्त्व दिया जाता है।

- ध्यातव्य है कि शिल्प की दृष्टि से सुसंस्कृत भाषा के न होने के बावजूद द्विवेदी जी ने कबीर को वाणी का डिक्टेटर कहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

(ख) निरखत अंक स्यामसुंदर के बार बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गई स्याम स्याम की पाती।।
गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहुँ बयारि लगी नहिं ताती।
तब की कथा कहा कहौं, ऊधो, जब हम बेनुनाद सुनि जाती।।
हरि के लाड़ गनति नहिं काहू निसिदिन सुदिन रासरसमाती।
प्राननाथ तुम कब धौं मिलोगे सूरदास प्रभु बालसँघाती।।

सन्दर्भ - प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ भक्तिकाल की कृष्ण भक्ति काव्यधारा के शिखर कवि सूरदास द्वारा रचित हैं। आचार्य शुक्ल ने सूरदास द्वारा रचना 'सूरसागर' के एक भ्रमरगीत प्रसंग का संकलन 'भ्रमरगीत सार' नाम से किया है। व्याख्येय पंक्तियाँ वहीं से उद्धृत हैं।

प्रसंग - कृष्ण के मथुरा चले जाने के उपरान्त गोपियाँ उद्धव से अपनी विरह की पीड़ा कह रही हैं।

व्याख्या - उद्धव द्वारा कृष्ण का पत्र दिए जाने पर गोपियाँ उस पत्र को अपने हृदय से लगा लेती हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा भावुक होकर रोने लगती हैं जिससे कागज की स्याही और गोपियों के अश्रु मिलकर पत्र को स्याम वर्ण का बना देते हैं। गोपियां उद्धव को कहती हैं कि हमें योग की बजाय तब की मधुर कहानियाँ बतलाओ जब हम कृष्ण के साथ मिलकर ब्रज में रास रचाया करती थीं। यदि मिलन की मधुर कथा सुनाओगे तो हम लगातार सुनने को तैयार हैं। अंततः गोपियाँ कृष्ण से पुनः ब्रज में बसने का आग्रह करती हैं।

विशेष - सूर बिम्बों के सम्राट हैं तथा प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में उनकी बिम्ब क्षमता दृष्टव्य है।
- 'स्याम-स्याम की पाती' में यमक अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रोई गँवाए बारह मासा । सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई । पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी । जासौं पाव सोहाग सुनारी ।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा । कोनि सो घरी करै पिउ फेरा? ।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा । रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोंरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा ।।
बरस दिवस धनि रोई कै, हारि परी चित झंखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

सन्दर्भ - प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकाल के निर्गुण प्रेमाश्रयी काव्यधारा के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित ग्रंथ 'पद्मावत' से उद्धृत है।

प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियाँ बारहमासा वियोग वर्णन खण्ड से ली गई हैं जिसमें नागमती के विरह का मार्मिक वर्णन है।

व्याख्या - नागमती रत्नसेन के सिंहलद्वीप चले जाने के उपरान्त वियोग में कहती है कि मैंने रो-रोकर बारह मास गंवा दिए तथा एक-एक पल मैंने युगों की तरह काटा है। इस दौरान

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैंने हजारों दुख झेले। लेकिन मेरा रूप मुरारी अर्थात् रत्नसेन अभी तक नहीं लौटा। जायसी ने नागमती विरह का ऊहात्मक वर्णन करते हुए लिखा है कि नागमती पति के प्रेम में जलकर कोयले की भाँति हो गई तथा शरीर में रत्ती भर भी माँस नहीं बचा। विरह में रक्त की बूँदें आँखों से गिरती रही किन्तु रत्नसेन नहीं लौटा। इस प्रकार विरह की व्यापकता दर्शनीय है।

विशेष - आचार्य शुक्ल ने नागमती के विरह को हिन्दू गृहिणी की पवित्र विरह-वाणी कहा है जो उपर्युक्त पंक्तियों में दृष्टव्य है।

- अवधी का ठेठ प्रयोग लोकभाषा की मधुरता को दर्शाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) शत घूर्णावर्त, तरंग-भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत काव्यावतरण छायावाद के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की लंबी प्रबंधात्मक कविता 'राम की शक्ति-पूजा' से उद्धृत है।

प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियों में प्रकृति की हलचलों के माध्यम से राम के मन के भीतर की हलचलों का प्रतीकात्मक वर्णन किया गया है।

व्याख्या - कवि लिखते हैं कि समुद्र में चक्रवात रूप घूर्णित तरंगें उठ रही हैं तथा वह जलराशि पहाड़ों की चट्टानों पर पछाड़ खाता टकरा रही है। वह जल पृथ्वी विजय करने के भाव से आगे बढ़ रहा है तथा अपने वक्ष को चौड़ा किए आगे आ रहा है। प्रतीकात्मक रूप से यही परिस्थितियाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम के मन के भीतर ही है। राम के मन के ऊपर वैसी ही उथल-पुथल मची है जैसी सागर में है तथा राम के भीतर भी विश्वविजय भाव छा रहा है।

विशेष - यह कविता बहुल अर्थों तथा अर्थगर्भत्व के गुण की वजह से हिन्दी साहित्य में लब्धप्रतिष्ठ है।

- शिल्प की दृष्टि से यह कविता इलियट के शब्दों में "पढ़े जाने व समझ में आने से पूर्व ही चमत्कृत कर देने वाली कविता" है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

सन्दर्भ - उपर्युक्त पद्यांश राष्ट्रवादी कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की महाभारत के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई कविता 'कुरुक्षेत्र' से उद्धृत है।

प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियों में कविता के महत्व का प्रतिपादन किया गया है।

व्याख्या - कवि लिखते हैं कि काव्य अर्थात् कविता आदि- अनादिकाल से आनन्ददायी शिक्षिका की भूमिका अदा कर रही है। कविता मानव मन को आह्लादित करने के साथ-साथ मानव चरित्र का परिष्कार भी करती है। कविता के लोकमंगल की भावना को श्रीराम के लोकमंगलवाद के समकक्ष दर्जा प्राप्त है। किन्तु अब कविता में केवल यौन प्रसंग तथा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानुकता ही बची है तथा काव्य से लोकमंगलवाद की भावना रूपी प्रकाश पलायन कर गया है अब केवल अंधकार शेष है।

विशेष - ओजगुण को सहन करने के लिए तत्समीकृत शब्दावली तथा ध्वनियों की पुनरावृत्ति की गई है।

- कविता के सामाजिक दायित्वों को ~~प्रतिपाद~~ महत्व दिया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'कबीर का मूल व्यक्तित्व कुछ भी हो, उनके काव्य की श्रेष्ठता में कोई संदेह नहीं।' विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर का मूल व्यक्तित्व हिन्दी समीक्षा में विवाद का विषय रहा है। कुछ समीक्षक उन्हें समाज-सुधारक, कुछ उन्हें संत तो कुछ उन्हें कवि मानते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि कबीर का मूल व्यक्तित्व तो उनका भक्त रूप है। व्यक्तित्व के शेष पक्ष तो छलुए मात्र हैं।

वस्तुतः इस तर्क के पीछे उनका मानना है कि कबीर ने भक्ति परंपरा में रचें पाई थी। परम्परा में तो उन्हें नाथों का सहयोग मिला था। भक्ति उनका वर्जित सत्य है जिसमें रमकर वह डूब जाते हैं।

साथ ही साथ आचार्य द्विवेदी कहते हैं कि कबीर के भक्त को मात लेने का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तात्पर्य यह नहीं है कि वे कवित्व की दृष्टि से कमज़ोर हैं। कबीर कुछ आयामों से तो हिन्दी की हजार साल की परम्परा के सर्वश्रेष्ठ कवि ठहरते हैं।

इसका सबसे बड़ा प्रमाण कबीर की भाषा है। आचार्य द्विवेदी लिखते हैं :- "कबीर भाषा के बादशाह थे, वाणी के डिक्टेटर। भाषा से उन्होंने जो चाहा, कहलवा लिया। बन गया तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर।" कबीर संदर्भ विशेष में सटीक शब्द का प्रयोग करते हैं। मुल्लों को फटकारते हुए उनकी भाषा फारसी प्रधान हो जाती है.

'काँकर पाथर जोराय के, मस्जिद लई बनाय,
ता चढ़ मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय'

वहीं पंडितों को फटकारते हुए वे तत्सम भाषा अपनाते हैं -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार
ताते तो चाकी भली पीस खाए संसार"

साथ ही साथ साहित्य के हजार सालों में कबीर सा व्यंग्यकार भी दुर्लभ है सिद्ध-नाथों के व्यंग्यों में जान नहीं है वे लोमड़ी के खट्टे अंगूरों की भाँति हैं वहीं कबीर के व्यंग्य इतने पैने हैं कि सामने वाला धूल झाड़कर चल देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकता।

"मूँड़ मुड़ाए हरि मिलै तो हर कोई लेय मुड़ाय
बार-बार के मूँड़ते भेड़ न बैकुण्ठ जाय।"

कबीर की वाणी में माधुर्य तथा प्रलाप भी द्रष्टव्य है। सूफी रहस्यवाद के प्रभाव में उनके काव्य में विरह तथा मिलन के प्रसंग बेहद खूबसूरत बन गए हैं:

"तलफै बिनु बालम मोर जिया।
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया।
तलफ-तलफ के भोर किया।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर स्वयं अपने कवित्व के बारे में कहते हैं कि

"तुम जिन जान्यौ गीति है,
यह निज ब्रह्म विचारि"

वहीं द्विवेदी जी का मानना है कि निर्भीक कबीर द्वारा कही गई सीधी मान्यताएँ चमत्कारपूर्ण लगती हैं तथा उन्हें कवि मानना पड़ता है।

वस्तुतः मूलतः भक्त होते हुए भी कबीर के व्यक्तित्व का हर पक्ष, जिसमें कवित्व भी है, छपते-छपते स्तर पर पूर्णता को छूता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) वक्रता और वाग्विदग्धता के धरातल पर भ्रमरगीतसार का आधार लेते हुए कवि सूरदास का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भ्रमरगीतसार मूलतः वक्रता तथा वाग्विदग्धता का ही प्रसंग है जिसमें सूर की गोपियाँ विरहजन्य पीड़ा के भावों में चरमस्तर पर हैं तथा उनके कथनों में भावप्रेरित वक्रता स्वतः आ गई है।

यूँ तो वाग्विदग्धता तथा वक्रता एक काव्यरीति है तथा लगभग सभी कवियों के यहाँ इसका प्रयोग हुआ है किन्तु विस्तार तथा गहनता की दृष्टि से इस मामले में सूर का कोई सानी नहीं है।

भ्रमरगीतसार में सूर ने गोपियों की विरहजन्य पीड़ा का व्यापक वर्णन किया है। विरहदग्ध गोपियों को जब उद्धव ज्ञान तथा योग मार्ग की सलाह देते हैं तो गोपियों की पीड़ा चरम स्तर पर पहुँच जाती है। ऐसे में खुला उपालंभ काव्य का जन्म हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूर की गोपियाँ वक्र भाषा में उद्धव को तर्क देती हैं और कहती हैं

"ऊधो मन न भए दस बीस,
एक हुतो सो गयो स्याम संग,
को आराधे ईस"

सयानी गोपियाँ विदग्धतापूर्ण शैली में उद्धव के निर्गुण ईश्वर पर प्रश्न भी खड़े करती हैं -

"निर्गुण कौन देस को बासी,
को है जनक, जननी को कहियत
कौन नारी को दासी"

अपने प्रेम को जताने के लिए गोपियाँ कहीं-कहीं उद्धव पर व्यंग्य भी करती हैं और कहती हैं कि - "आयो घोष बड़ो व्यापारी।"

वस्तुतः उपर्युक्त प्रसंगों में सूर का कवित्व अपने चरम स्तर पर उभरा है क्योंकि सूर भावुक गोपियों के भावों की तीव्रता को सटीक शब्दों में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यक्त करने में सफल हुए हैं। सूर की बिम्बात्मक क्षमता, ब्रज की लोकधुन, संगीतात्मक, ध्वन्यात्मक, लयात्मकता तथा अर्थालंकारों की सघनता अपने विराट रूप के साथ भ्रमरगीत प्रसंग में द्रष्टव्य है।

अतः आचार्य शुक्ल के शब्दों में कहें तो सूर का कवित्व भ्रमरगीत प्रसंग में अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में उभरता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'लोकनायक' का दर्जा उस कवि को दिया जाना चाहिए जिसमें लोकमंगल की भावना आद्यान्त रूप से निरन्तर मौजूद हो तथा लोकमंगलवाद ही जिसके काव्य का लक्ष्य हो।

इस दृष्टि से तुलसी तथा कबीर का मूल्यांकन करने पर हम पाते हैं कि कबीर में भी अपने आस-पास की विद्रूपताओं पर चोट करने की प्रवृत्ति दिखलाई पड़ती है तथा तुलसी भी अपने युग की पीड़ाओं से त्रस्त नज़र आते हैं।

कबीर की सामाजिक चेतना

→ "मूँड़ मुँड़ाए हरि मिलैं तो हर कोई लेय मुँड़ाय
बार-बार के मूँड़ते भेड़ न बैकुण्ठ जाय"

→ जो तू बांभन-बंभनी का जाया,
आन-बाट है क्यों न आया।

तुलसी की सामाजिक चेतना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ कलि बारहिं बार दुकाल परै,
बिनु अन्न जगत लोग सब मरै।

→ खेती न किसान को
भिखारी को न भीख बलि ....

दोनों कवियों में पर्याप्त सामाजिक चेतना के बावजूद ~~अन्तर~~ इनकी रचनादृष्टि में अन्तर है। कबीर में समाज की चिन्ताएँ होने के बावजूद समाज-सुधारक रूप उनका केन्द्रीय व्यक्तित्व नहीं है। मूलतः तो कबीर भक्त हैं तथा समाज की चेतना सहायक रूप में विद्यमान है।

जबकि तुलसी के काव्य का उद्देश्य ही लोकमंगलवाद है। तुलसी के राम ईश्वर कम और मर्यादा पुरुषोत्तम व समाज कल्याण के भाव से युक्त हैं। तुलसी की मूल चिन्ता रामराज्य और कलियुग, बेरोजगारी तथा अकाल इत्यादि है।

इस दृष्टि से लोकनायक की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कसौटी पर तुलसी ज़्यादा खरे उतरते हैं।
आचार्य द्विवेदी जी के शब्दों में
"भारत का लोकनायक वही हो सकता है
जो समन्वय की अपार चेतना लेकर
पैदा हुआ हो।" इस प्रकार तुलसी की
समन्वय चेतना तो पूरे साहित्य में
अद्वितीय है। वे कहते हैं:-
- 'अगुनहिं- सगुनहिं नहीं कछु भेदा'
- 'भक्तिहिं- ज्ञानहिं नहीं कछु भेदा'

वस्तुत: तुलसी का मूल व्यक्तित्व
ही लोकमंगलकारी लोकनायक का है जबकि
कबीर में यह सहायक रूप में मौजूद
है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोई भी महान रचना अपने समय तक ही सीमित नहीं हो जाती तथा समय के साथ वह नए-नए अर्थों को धारण करती है।

इसी अर्थ में सूर के उद्धव, कृष्ण तथा गोपियाँ वर्तमान लोकतांत्रिक राजनीति के प्रतीकों को धारण करते हैं।

वर्तमान में जिस प्रकार राजनेता जनता के प्रिय होते हैं तथा जनता के स्नेह से चुनाव जीतकर राजधानी जाते हैं और सत्ता में भागीदार बनते हैं; ठीक उसी प्रकार कृष्ण भी ब्रज की जनता अर्थात गोपियों के प्रिय हैं तथा राजधानी (मथुरा) में जाकर राजसत्ता सम्पन्न हो गए हैं।

जिस प्रकार राजनेता राजधानी जाकर जनता से किए वादे भूल जाते हैं तथा वापस अपने चुनाव क्षेत्र में लौटने से कतराते हैं; उसी प्रकार कृष्ण ने भी गोपियों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से जटर लौटना उनके भावनात्मक सूनेपन को दूर करने का वायदा किया था जिसे वे भूल गए हैं।

इसी तरह अभी के नेता जनता का ध्यान मूल मुद्दों से भटकाने हेतु विविध लोक लुभावन योजनाओं की घोषणा करते हैं तथा बिचौलिये नेताओं को अपने चुनाव क्षेत्र में भेजते हैं ताकि जनता का गुस्सा कुछ या निकल जाए; उसी प्रकार कृष्ण ने उद्धव को गोपियों को ज्ञान मार्ग सिखाने भेजा है।

कहीं-कहीं तो सूर के कथन सीधे-सीधे राजनीति पर टिप्पणी हैं। गोपियाँ कृष्ण के छलियापन को राजनीति कहती हैं
- "हरि हैं राजनीति पढ़ आए"

कहीं सूर 'अंधधुंध सरकार' कहते हुए प्रशासन के राजनीति पर टिप्पणी करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु यह प्रतीक साम्य बहुत देर तक साथ नहीं दे पाता क्योंकि वर्तमान के नेता तो अगले चुनाव की चिन्ता में नियोजित नेताओं को भेजते हैं ~~…~~ जबकि कृष्ण अपनी इच्छा से राजसुख भोगने के लिए मथुरा में नहीं है बल्कि वे तो उग्रसेन के आग्रह पर मथुरा में हैं।

उद्धव को भेजने के पीछे भी उनका उद्देश्य गोपियों को समझाना नहीं बल्कि उद्धव को भक्ति का महत्व बतलाना है। यदि सूर को इस प्रतीक का निर्वाह करना होता तो वे कृष्णभक्त होने के नाते उद्धव को विजयी बतलाते जबकि यहाँ गोपियों ने उद्धव का रूप परिवर्तन कर दिया है।

वस्तुतः कोई भी समानता अर्थ या आख्या किसी काव्य पर शत प्रतिशत लागू नहीं हो सकती तथा सूर के समय में लोकतांत्रिक राजनीति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं थी इसलिए ऐसा नहीं लगता कि सूर ने इस प्रसंग को रचना के समय में ध्यान में रखा होगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित रामराज्य की अवधारणा की समालोचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुलसीदास जी ने अपने समय के तमाम सत्यों का उद्घाटन अपनी रचनाओं में किया है तथा तत्कालीन समस्याओं को 'कलियुग' का नाम दिया है। कलियुग की समस्याओं से निपटने के लिए उनके 'यूटोपिया' का नाम ही 'रामराज्य' है।

रामराज्य की अवधारणा कवितावली के उत्तरकाण्ड तथा रामचरितमानस में फैली है जिसमें गोस्वामी जी ने निम्नलिखित आयाम समेटे हैं:-

(क) सम्पूर्ण पृथ्वी तक विस्तृत अवधारणा -
रामराज्य केवल अयोध्या या भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें सम्पूर्ण चराचर जगत सम्मिलित है।

(ख) सभी लोग सुखी हों - रामराज्य में किसी भी व्यक्ति की अल्पमृत्यु नहीं होगी, किसी व्यक्ति को कोई दुःख नहीं होगा।

"दैहिक दैविक भौतिक तापा
रामराज्य काहुँ नहीं व्यापा"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) वर्णाश्रम धर्म का पूर्ण पालन - तुलसी के रामराज्य में सभी लोग अपने अपने वर्ण के अनुसार कर्तव्यों का पालन करेंगे।

(घ) नर - नारी समानता - तुलसी अपने रामराज्य में नर - नारी समानता पर बल देते हुए कहते हैं

"रामभगति रत नर अरु नारी"

"रमनारिव्रत रत सब झारि"

(ङ) राजा एवं प्रजा द्वारा कर्तव्यपालन

तुलसी के रामराज्य में राम एक आदर्श राजा के कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं तथा सभी सेवकगण भी अपने - अपने कर्तव्यों के पालन में लगे हैं।

(च) सभी लोग विप्रों के चरणों की सेवा करें

तुलसी के रामराज्य में सभी लोग गुणीजनों की सेवा में लगे रहते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

पया इस स्थान में प्रश्न ख्या के अतिरिक्त कुछ लिखें।

(lease do not write ything except the uestion number in is space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

वर्णाश्रम जैसी व्यवस्थाएँ आज के समय में विवादास्पद है क्योंकि ये दलितों के शोषण को जन्म देती हैं इसके जैसे कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो रामराज्य एक ~~कल्याण~~ प्रगतिशील व्यवस्था है जो गांधी के रामराज्य तथा आज के लोक कल्याणकारी राज्य से मिलती जुलती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) काव्यात्मकता की दृष्टि से कबीर की भाषा का अनुशीलन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर अपने कवित्व को लेकर हिन्दी समीक्षा में काफी विवादित रहे हैं। आचार्य शुक्ल कबीर की भाषा के बारे में कहते हैं कि बहुत परिष्कृत तथा सुसंस्कृत भाषा न होते हुए भी कबीर की भाषा कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव पैदा करती है। सामान्यतः शुक्ल जी ने कबीर की भाषा को काव्योचित नहीं माना है वहीं आचार्य द्विवेदी जी लिखते हैं:- "कबीर भाषा के बादशाह थे, वाणी के डिक्टेटर। जिस बात को जिस रूप में चाहा, भाषा से उसी रूप में कहलवा लिया, बन पड़ा तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर।"

वस्तुतः कबीर की भाषा बहुत परिष्कृत, परिमार्जित न होते हुए भी कुछ ऐसे गुणों को धारण करती है जो हज़ार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
lease do not write
ything except the
estion number in
is space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

साखी की साहित्य परम्परा में उल्लेख है -

(अ) सन्दर्भ विशेष में सटीक शब्द प्रयोग करने की क्षमता कबीर की भाषा का विशेष गुण है। मुल्लों पर व्यंग्य करते हुए कबीर खड़ी प्रधान भाषा का प्रयोग करते हैं वहीं पंडे पर आक्रमण में वे तत्सम भाषा का प्रयोग करते हैं।

→ "काँकर पाथर चुनाय के मस्जिद लई बनाय,
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे क्या बहरा हुआ खुदा"
(खड़ी शब्दावली)

→ "पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूँ पहार
ता ते तो चाकी भली पीस खाय संसार"
(तत्सम शब्दावली)

(ब) कबीर की दूसरी बड़ी विशेषता है व्यंग्य क्षमता। कबीर जैसा व्यंग्यकार दूसरी परम्परा में नहीं हुआ। वे लिखते हैं

"जो तू बाँभन-बँभनी का जाया,
आन बाट है क्यों नहीं आया"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(स) कबीर की भाषा में माधुर्य तथा प्रसाद भी अतिरेकता में मौजूद है। विशेषतः उन प्रसंगों में यह विशेषता दिखती है जहाँ वे भावात्मक रहस्यवाद में सूफी भाव से लिखते हैं -

तलफै बिनु बालम मोर जिया,
दिन नहीं चैन, रात नहीं निंदिया
तलफ- तलफ के भोर किया।

निष्कर्षतः यह बात सत्य है कि कबीर काव्य के शोभाकारक तत्वों छंद, प्रतीक, अलंकार के प्रति उदासीनता बरतते हैं तथा भाषा के बारे में कहते हैं कि "संसकिरत है कूपजल, भाखा बहता नीर" किन्तु फिर भी कबीर की भाषा मलिकाते वंचित नहीं है तथा वह लोकभाषा परंपरा की वाहक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) लेकिन जैसे ही ख़बर शहर में पहुँची, वहाँ से मंत्रियों, नेताओं और अख़बारनवीसों की गाड़ियों का ताँता लग गया। आग से उठने वाले धुएँ के बादल तो एक ही दिन में छँट गए, पर शहरी गाड़ियों से उठनेवाली धूल के बादल कई दिन तक मँडराते रहे। नेताओं ने गीली आँखों और रुँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया और बड़े-बड़े आश्वासन दिए। अख़बारनवीस आए तो दनादन उस राख के ढेर की ही फोटो खींचकर ले गए। दूसरे दिन अख़बार में छापकर घर-घर पहुँचा भी दिया–इस घटना का सचित्र ब्यौरा। किसी ने सवेरे खुमारी में अँगड़ाई लेते हुए, तो किसी ने चाय की चुस्की के साथ पढ़ा, देखा। देखते ही चेहरे पर विषाद की गहरी छाया पुत गई। चाय का घूँट भी कड़वा हो गया शायद। ढेर सारी सहानुभूति और दुख में लिपटकर निकला–'ओह, हॉरिबल...सिम्पली इनह्यूमन! कब तक यह सब और चलता रहेगा? त्...त्...त्!' और पन्ना पलट गया। थोड़ी देर बाद गाँववालों की ज़िंदगियों की तरह ही अख़बार भी रद्दी के ढेर में जा पड़ा।

सन्दर्भ - व्याख्येय पंक्तियाँ नवलेखन के दौर की सशक्त लेखिका मन्नू भण्डारी द्वारा लिखे गए राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से उद्धृत हैं।

प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियों में सरोहा गाँव में हरिजनों के ज़िन्दा जला देने की घटना पर नेताओं तथा बुद्धिजीवियों की प्रतिक्रियाओं पर व्यंग्य किया गया है।

व्याख्या - हरिजनों को जीवित जला दिए जाने की घटना के शहर पहुँचते पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वहाँ से नेता तथा मौकापरस्त मंत्री राजनीतिक लाभ लेने हेतु गाँव मे पहुंच गए तथा नकली संवेदना प्रकट कर पीड़ितो के हितैषी होने का दावा करने लगे। पत्रकार मंडली ने सनसनी के रूप मे खबर को पेश किया तथा नकली बुद्धिजीवी वर्ग ने क्षणिक संवेदना प्रकट करते हुए घटना पर शोक प्रकट किया तथा कुछ ही समय मे सब लोग मौतों को भूल गए।

विशेष - उपर्युक्त पंक्तियो में लेखिका के व्यंग्यों की पैनी धार दर्शनीय है।
- मन्नू भण्डारी नवलेखन के दौर की लेखिका होते हुए भी आत्माभिव्यक्ति को छोड़कर समकालीन यथार्थ को समेटती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ - उपर्युक्त गद्यांश हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी नाटककार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक स्कन्दगुप्त से उद्धृत है।

प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियों में मातृगुप्त कविता के अलौकिक महत्व को बतला रहे हैं।

व्याख्या - मातृगुप्त कहते हैं कि कविता कवि की कला एक रंगभरे चित्र की भाँति है जो स्वर्ग के भावपरक संगीत के समकक्ष है। यह कविता ही है जो समस्त चलायमान जगत को आपस में जोड़ती है जैसे - जड़ तथा चेतन, सत् तथा असत्। कविता ही व्यक्ति के आन्तर्जगत का उद्घाटन बहिर्जगत के समक्ष करवाती है तथा बाह्य वस्तुओं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का कल्याण कहलाता व्यक्ति की अन्तरात्मा को भाती है

विशेष- (अ) प्रसाद भावों के कवि है तथा यहाँ भी उन्होंने कविता को भावुक होकर अलौकिक आनन्द का स्रोत बतलाया है

(ब) कविता की अन्य कलाओं से तुलना के सन्दर्भ में बिहारी का एक दोहा प्रासंगिक है -

'तंत्रीनाद कवित रस सरस राग रति रंग
अनबूड़े बूड़े तिरे जो बूड़े सब अंग।'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारते बनायीं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय-योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मज़दूरों की हाज़िरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित नई ~~कविताओं~~ कहानियों के प्रतिनिधि संग्रह 'एक दुनिया: समानान्तर' की कहानी 'भोलाराम का जीव' से उद्धृत हैं, जिनकी रचना 'हरिशंकर परसाई' ने की है।

प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियों में यमराज तथा चित्रगुप्त के संवाद के माध्यम से भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया है।

व्याख्या - भोलाराम के जीव के नरक न आने पर नरक में खलबली मच गई है। इसी बीच लेखक लिखते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में नर्क में कई भ्रष्टाचारी ठेकेदार, इंजीनियर, कारीगर इत्यादि आ गए हैं जिन्होंने पृथ्वी पर भ्रष्टाचार कर पैसे हड़प लिए थे।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मजदूर भी काम पर नहीं जाते थे तथा उनकी हाज़िरी कोई और उठा लेता था। इन सब भ्रष्टाचारियों ने मिलकर नकि में कई इमारतें बना डाली हैं।

विशेष (अ) हरिशंकर परसाई समकालीन समाजिक-राजनीतिक समस्याओं पर तीक्ष्ण व्यंग्य के लिए जाने जाते हैं।
(ब) अपनी संवाद योजना तथा दृश्य योजना के चलते भोलाराम का जीव कहानी का सफल मंचन भी किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला आता है। अब सोने का समय नहीं है। अँगरेज का राज्य पाकर भी न जगे तो कब जागोगे। मूर्खों के प्रचंड शासन के दिन गए, अब राजा ने प्रजा स्वत्व पहिचाना। विद्या की चरचा फैल चली, सबको सब कुछ कहने-सुनने का अधिकार मिला, देश-विदेश से नई-नई विद्या और कारीगरी आई। तुमको उस पर भी वही सीधी बातें, भाँग के गोले, ग्रामगीत, वही बाल्यविवाह, भूत-प्रेत की पूजा, जन्मपत्री की विधि! वही थोड़े में संतोष, गप हाँकने में प्रीति और सत्यानाशी चालें! हाय अब भी भारत की यह दुर्दशा!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नाटकों के पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नाटक भारत-दुर्दशा से उद्धृत है।

प्रसंग - नाटक में 'भारत भाग्य' के माध्यम से नवजागरण का संदेश देने का प्रयास किया गया है।

व्याख्या - 'भारत भाग्य' कहता है कि अंग्रेजो के शासन में पश्चिम की वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली भारत में आ चुकी है। अब मध्यकालीन राज व्यवस्था नहीं है। पश्चिमी देशों की शिक्षा प्रणाली में आधुनिक मूल्य तथा वैज्ञानिकता मौजूद है किन्तु भारतीयों ने अभी भी अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, कुरीतियों में विश्वास है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

थोड़ा सा पाकर भी संतुष्ट हो जाते
की मानसिकता के कारण कभी भी
भारत की दुर्दशा बनी हुई है।

विशेष (अ) भारतेन्दु नवजागरण के दौर के
लेखक है तथा तत्कालीन लेखकों की
रचनाओं का उद्देश्य सुषुप्त भारत का
उद्बोधन करता था।
(ब) खड़ी बोली अपनी प्रारंभिक अवस्था
में होने के बावजूद विलक्षण प्रभाव
छोड़ रही है।

प्रासंगिकता - पश्चिमी वैज्ञानिक मानसिकता
तथा भारत मे कर्मकाण्डो व अंधविश्वासों
की मौजूदगी का द्वन्द्व आज भी प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ - उपर्युक्त गद्यांश हिन्दी नाटकों के ~~[illegible]~~ ~~केन्द्रीय [illegible]~~ पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नाटक 'भारत-दुर्दशा' से उद्धृत है।

प्रसंग - लेखक उपर्युक्त गद्यांश में हिन्दू धर्म में अधिकाधिक मतों व सम्प्रदायों की उपस्थिति पर चिन्ता जता रहे हैं।

व्याख्या - लेखक का कहना है कि हिन्दू धर्म में एकता का सदा से अभाव रहा है तथा यहाँ अनेकानेक मत व पंथ मौजूद हैं। इस स्थिति को उन्होंने 'बहुनिष्ठ नारी' के समान बतलाया है। आज तक हिन्दू धर्म में नए मत पनप रहे हैं तथा लगातार धर्म के टुकड़े होते जा रहे हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष : (अ) उपर्युक्त पंक्तियों में नवजागरण की चेतना स्पष्ट तौर पर दिखाई देती है जहाँ आत्मालोचना व आत्मपरिष्कार चिन्तन के केन्द्र में है।

(ब) भारतेन्दु की भाषा आलंकिक होते हुए भी अलंकृत नहीं है तथा व्याकरणिक त्रुटियाँ नगण्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मोहन राकेश का लक्ष्य हिन्दी में मौलिक रंगमंच की स्थापना का था। अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में वे अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति में कहाँ तक सफल हो सके हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश हिन्दी के मौलिक रंगमंच की स्थापना के लिए हिन्दी नाटक परिदृश्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। प्रताप के मन में जो नाटक रंगमंच से दूर हो गए थे, राकेश ने उन्हें पुनः रंगमंचानुकूल बनाया तथा नाटकों को मंचीयता के नए आयाम दिए।

राकेश पश्चिम के तकनीक तत्व तथा दृश्य तत्व पर टिके नाटकों के बरक्स हिन्दी नाटकों को श्रव्य तत्व तथा मानव तत्व पर आधारित बनाना चाहते थे तथा वे उसमें सफल भी हुए।

उनका 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक उनकी इस प्रतिबद्धता को पूरी तरह धारण करता है तथा मंचन में नए प्रतिमान रचता है।

इस नाटक में तीन अंक हैं किन्तु

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृश्य एक ही है तथा पूरे नाटक में तीन चादरों, दो दीपकों, कुछ बर्तनों व कपड़ों तथा एक चारपाई की सहायता से खेला जा सकता है। इस नाटक में एक भी दृश्य ऐसा नहीं है जिसको दिखाने हेतु प्रोजेक्टर या किसी अन्य तकनीक की सहायता लेनी पड़े जबकि प्रसाद के नाटकों में युद्ध, बाढ़, शेर जैसे कठिन दृश्यों की भरमार है।

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में रंगसंकेतों की भरमार है तथा कहीं-कहीं तो दो पृष्ठों तक लगातार रंग-संकेत दिए गए हैं। इसके विपरीत भारतीय नाटक परम्परा में रंगसंकेतों के प्रति उदासीनता बरती जाती है।

इस नाटक में मौन की भाषा तथा संकेतों की भाषा का भी सशक्त प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुआ है तथा कहीं-कहीं तो अर्थ का संप्रेषण संकेतों से ही कर दिया गया है जैसे -

"मल्लिका मोढ़े पर बैठ जाती है तथा अपना निचला होंठ काटने लगती है"

नाटक के तीसरे अंक में एकालाप तथा स्वगत कथनों के बावजूद नाटकीय तनाव शिथिल नहीं हुआ है जबकि इसके विपरीत प्रसाद के नाटकों में दार्शनिक संवाद, स्वगत कथन तथा बार-बार आने वाले गीत नाटकीय तनाव को शिथिल कर देते हैं।

वस्तुतः आषाढ़ का एक दिन हिन्दी साहित्य की नाटक परम्परा में एक चरम सृजनात्मक उपलब्धि है जो अपने मंचन के लिए जाना जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण की उपयुक्तता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद स्वच्छंदतावादी रचनाकार हैं। अतः उनके नाटकों में चरित्र तत्व हावी रहता है यह लक्षण रचनाओं के नामकरण में भी दिखता है। उनके अधिकतर नाटकों के नाम चरित्र के आधार पर रखे गए हैं जैसे - चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, विशाख, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु इत्यादि।

किसी भी नामकरण की उपयुक्तता की कसौटियाँ निम्नलिखित मानी जा सकती हैं:

- नामकरण रचना के सम्पूर्ण कथ्य को पाठक के मन में मूर्त करे।
- जिज्ञासा उत्पन्न करे।
- कथानक के तंतुओं में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाए।

इन कसौटियों पर 'स्कंदगुप्त' नामकरण एकदम खरा उतरता है क्योंकि स्कंदगुप्त ही नाटक का केंद्रीय चरित्र है तथा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान मे प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कथानक उनके इर्द-गिर्द ही बुना गया है साथ ही साथ प्रसाद शैवाद्वैतवाद तथा आनन्दवाद दर्शन के अध्येता व अनुगामी रहे हैं एवं स्कंदगुप्त का चरित्र उसी दर्शन को अपना जीवन लक्ष्य मानता है। वह कहता है -

" मुझे योगियों की समाधि, बौद्धों का निर्वाण और पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति एक साथ चाहिए"

इसके अलावा प्रसाद के नाटक लेखन का उद्देश्य भारतीय जनमानस का जागरण करना था तथा इसके लिए वे ऐसा चरित्र इतिहास से उठाना चाहते थे जिसने अपने समय में विदेशी आक्रान्ताओं से संघर्ष किया हो। 'स्कंदगुप्त' नामकरण इस संदर्भ को पूर्णरूपेण धारण करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

एक विचारणीय बिन्दु यह भी है कि यदि प्रसाद नाटक का नाम स्कंदगुप्त न रखते तो क्या रखते? स्थितिमूलक नामकरण में 'ध्रुवों की पराजय' एक विकल्प था किन्तु यह स्थान व काल विशेष से बँध जाता। अन्य चरित्रमूलक नामकरण 'देवसेना' हो सकता था किन्तु उसमें विदेशी आक्रान्ताओं के संघर्ष का भाव व्यक्त नहीं होता।

वस्तुतः स्कंदगुप्त नामकरण इस नाटक का सर्वश्रेष्ठ नामकरण है जो सभी आवश्यकताओं को संतुष्ट करता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की अभिनेयता पर प्रकाश डालिये। 15

'भारत दुर्दशा' हिन्दी नाट्य परम्परा के आरम्भिक दौर में लिखा गया लघु नाटक है जो नवजागरण की चेतना का निर्वहन करता है।

अभिनेयता की दृष्टि से यह एक श्रेष्ठ नाटक है जिसमें छः अंक तथा पाँच दृश्य हैं। इस नाटक को भी कुछ पर्दों, बम्बू, रस्सियों, टेबल तथा कुर्सियों की मदद से खेला जा सकता है।

रंगसंकेत भी भारत-दुर्दशा में पर्याप्त मात्रा में दिए गए हैं जैसे

"भारत दुर्दैव — आधा मुसलमानी, आधा क्रिस्तानी, हाथ में नंगी तलवार लिए"

"अंधकार — स्खलित हृदय करते हुए गाता हुआ आता है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-दुर्दशा की भाषा नाटकीय तनाव को धारण करती है तथा छोटे व चुस्त संवादों से नाटकीयता में वृद्धि हुई है।

कुछ गीतों ने भी नाटक के प्रभाव को बढ़ाया है तथा नाटक की मंचीय प्रभाव में वृद्धि की है।

किन्तु भारत-दुर्दशा की अभिनेयता निरापद नहीं है। भारत दुर्दशा के अंतिम अंक में भार एकालाप तथा लम्बे गीतों से नाटकीय तनाव शिथिल हुआ है।

भारत-दुर्दशा की भाषा में आह! हाय! जैसे शब्दों तथा ग्राम्यत्व दोष व अश्लीलत्व दोष से ~~भाषा~~ नाटक कमजोर हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वस्तुतः आधुनिक दौर के नाटकों में नाटकीयता की दृष्टि से भारत-दुर्दशा एक श्रेष्ठ नाटक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation